Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 17, Issue No. 2, October-2020, ISSN 2230-7540

# पुस्तकालयों में उपलब्ध ई-संसाधनों के बारे में उत्तरदाताओं की जागरूकता का अध्ययन

**Reetu Tiwari[1]*, Dr. Pradeep Kumar Dubey[2]**

[1] Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.

[2] Professor, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.

*सार - ई-संसाधन आजकल पुस्तकालय संग्रह का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। इन स्रोतों की सामाजिक वज्ञान और मान वकी वषयों की तुलना में वज्ञान और प्रौद्यो गकी में महत्वपूर्ण भू मका है। भाषा और साहित्य में कई ऑनलाइन स्रोत उपलब्ध नहीं हैं, और जो उपलब्ध हैं वे बिखरे हुए हैं। इस लए, भाषा और साहित्य वषयों के ई-संसाधनों के उपयोग और जागरूकता का अध्ययन करने की आवश्यकता है। वर्तमान अध्ययन वश्व वद्यालय के शोधा र्थयों द्वारा ई-संसाधनों की जागरूकता और उपयोग का वश्लेषण करने का एक प्रयास है, और कुछ उद्देश्यपूर्ण सुझावों के साथ ई-संसाधनों तक पहुंचने में उपयोगकर्ताओं के सामने आने वाली समस्याओं और बाधाओं का पता लगाने का प्रयास है। इसके सुधार के लए। खोज से पता चलता है क पुस्तकालयों को अपने उपयोगकर्ताओं के लए सु वधाओं और सेवाओं में सुधार करने की आवश्यकता है। पुस्तकालयों को अ धक से अ धक उपयोगकर्ताओं के लए उपलब्ध कराए जाने के लए अ धक ऑनलाइन संसाधन प्राप्त करने पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है।*

*खोजशब्द - ई-संसाधन, प्रौद्यो गकी*

----------X----------

## परिचय

पछले एक दशक में लोगों के काम करने के तरीके में बड़ा बदलाव आया है। परिवर्तन प्रौद्यो गकी में आमूल-चूल परिवर्तन जैसे कंप्यूटरों की शुरूआत, दूरसंचार को जोड़ने और इंटरनेट की लोक प्रयता में वृद् ध के कारण हैं। ये वकास जारी हैं, और इसमें मुख्य रूप से महत्वपूर्ण हैं, वे घर या कार्यस्थल पर लोगों को भारी मात्रा में जानकारी तक पहुंच प्रदान करते हैं। डजिटल रूप में संग्रहीत जानकारी एक बार सभी भौतिक और भौगो लक बाधाओं को तोड़ सकती है और दुनिया के सबसे दूरस्थ कोनों तक पहुंच सकती है। इलेक्ट्रॉनिक रूप से भारी मात्रा में जानकारी को संर क्षत और संसा धत करने के लए नई प्रौद्यो ग कयां उभर रही हैं। सूचना तक पहुँचने के लए नई पद्धतियाँ लगभग दैनिक आधार पर वक सत हो रही हैं। सही समय पर सही सूचना तक पहुंच समय की मांग है। व भन्न प्रकार की जानकारी, एक उपयोगकर्ता पुस्तकालय या सूचना केंद्र में उपलब्ध संसाधनों से लेकर व भन्न नेटवर्कों से नेटवर्क आधारित सूचना सेवाओं तक व भन्न स्तरों पर पहुंच सकता है।[1]

सूचना और संचार प्रौद्यो गकी (आईसीटी) क्रांति को 21वीं सदी के चमत्कारों में से एक माना जाता है। जानकारी प्रंट से डजिटल रूप में बदल गई है। कसी भी पुस्तकालय का सफल संचालन काफी हद तक पुस्तकालय संग्रह की पसंद पर निर्भर करता है। सूचना प्रौद्यो गकी के वर्तमान युग में, पुस्तकालय और सूचना केंद्र इलेक्ट्रॉनिक सूचना संसाधनों का उपयोग करने के लए बाध्य हैं। सूचना क्रांति का सबसे अच्छा परिणाम ई-संसाधन है, जो हमारे पुस्तकालय को हर पहलू में बदल देता है। ई-संसाधन अत्य धक मूल्यवान इलेक्ट्रॉनिक सूचना संसाधन है और अ धकांश पुस्तकालयों के लए डजिटल संग्रह का सबसे बड़ा और सबसे तेजी से बढ़ता हुआ खंड बन गया है। अब, ई-संसाधन कसी भी पुस्तकालय या सूचना केंद्र में एक महत्वपूर्ण भू मका निभाते हैं। ई-संसाधन कसी भी पुस्तकालय के संग्रह का एक बड़ा हिस्सा होते हैं।

www.ignited.in

इंटरनेट और वर्ल्ड वाइड वेब के पास व्यापक कवरेज और सबसे तेज पहुंच के साथ सूचना का सबसे बड़ा स्रोत है। यह वैश्विक संचार और सूचनाओं के आदान-प्रदान के लए सबसे शक्तिशाली उपकरण है। वेब पर सार्वजनिक रूप से उपलब्ध जानकारी की मात्रा अ वश्वसनीय दर से लगातार बढ़ रही है। इसने लोगों की सूचनाओं तक पहुँचने के तरीके में क्रांति ला दी है, और डजिटल पुस्तकालयों, सूचना प्रसार और पुनर्प्राप्ति, शक्षा, वा णज्य, मनोरंजन, सरकार और स्वास्थ्य देखभाल जैसे क्षेत्रों में नई संभावनाओं को खोल दिया है। www कई वषयों पर शोध पूरा करने के लए ले कन गुणवत्तापूर्ण वेब सामग्री खोजने के लए एक बेहतरीन जगह हो सकती है। ई-संसाधन एक इलेक्ट्रॉनिक सूचना संसाधन हैं जो वेब पर, परिसर में या बाहर पहुंच सकते हैं। एक कम्प्यूटरीकृत डवाइस द्वारा हेरफेर के लए एन्कोडेड सामग्री (डेटा और / या प्रोग्राम। इस सामग्री को कम्प्यूटरीकृत डवाइस (जैसे सीडी-रोम ड्राइव) या कंप्यूटर नेटवर्क से कनेक्शन से सीधे जुड़े परिधीय उपयोग की आवश्यकता हो सकती है[2] (उदाहरण के लए- इंटरनेट)।

ई-संसाधन को एक ऐसे संसाधन के रूप में परिभा षत कया जाता है जिसके लए कंप्यूटर एक्सेस या कसी इलेक्ट्रॉनिक उत्पाद की आवश्यकता होती है जो डेटा का संग्रह प्रदान करता है, चाहे वह टेक्स्ट हो जो पूर्ण टेक्स्ट आधारित, इलेक्ट्रॉनिक जर्नल, छ व संग्रह, अन्य मल्टीमी डया उत्पाद और संख्यात्मक, ग्रा फकल या समय आधारित हो। व्यावसायिक रूप से उपलब्ध शीर्षक जिसे वपणन के उद्देश्य से प्रका शत कया गया है। इन्हें सीडी-रोम पर, टेप पर, इंटरनेट के माध्यम से और इसी तरह वतरित कया जा सकता है। पछले कुछ वर्षों में, कई तकनीकों और संबं धत मानकों को वक सत कया गया है जो दस्तावेजों को इलेक्ट्रॉनिक रूप में बनाने और वतरित करने की अनुमति देते हैं। इस लए वर्तमान स्थिति से निपटने के लए, पुस्तकालय अपने संग्रह वकास के लए नए मी डया, अर्थात् इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों की ओर रुख कर रहे हैं ता क उपयोगकर्ताओं की मांगों को बेहतर ढंग से पूरा कया जा सके। चुंबकीय और ऑप्टिकल मी डया पर ई-संसाधनों का वश्व वद्यालय के पुस्तकालयों के संग्रह पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। हेरफेर और खोज के लए अंतर्निहित क्षमताओं के कारण ये अ धक उपयोगी हैं, सूचना पहुंच प्रदान करना है उनके प्राप्त सूचना संसाधनों को सस्ता करना, भंडारण और रखरखाव आदि में बचत करना, और कभी-कभी इलेक्ट्रॉनिक रूप ही एकमात्र वकल्प होता है।[3]

इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों के रूप

एक इलेक्ट्रॉनिक संसाधन को एक संसाधन के रूप में व र्णत कया जाता है जिसके लए मशीन एक्सेस या ज्ञान संग्रह प्रदान करने वाले अन्य इलेक्ट्रॉनिक उत्पाद की आवश्यकता होती है। हाल के वर्षों में, कई तरीके पेश कए गए हैं और इसी तरह के सद्धांतों ने इलेक्ट्रॉनिक रूप में रिकॉर्ड के उत्पादन और प्रसार की अनुमति दी है। अत्याधुनिक तकनीकों के अनुसार, पुस्तकालयाध्यक्ष चयन नवाचारों के लए इलेक्ट्रॉनिक सेवाओं सहित डजिटल उपकरणों पर भरोसा करते हैं, जो उपयोगकर्ताओं के रिकॉर्ड को बेहतर ढंग से पूरा करते हैं।[4]

ई-संसाधनों को निम्न ल खत भागों में बांटा गया है, उदाहरण के लए:

- इलेक्ट्रॉनिक जर्नल

कुछ लेखों और समाचार पत्रों के लए जो ऑनलाइन तैयार और प्रसारित कए जाते हैं, इलेक्ट्रॉनिक जर्नल या ई-जर्नल शा मल हैं। इलेक्ट्रॉनिक पत्रिकाओं को कसी भी समाचार पत्र, पत्रिका, ई-ज़ीन, वेबज़ाइन, या इलेक्ट्रॉनिक प्रकाशन प्रपत्र के रूप में व र्णत कया जा सकता है जो क www, गोफर, एफ़टीपी, टेलनेट, इलेक्ट्रॉनिक मेल, या लस्टसर्व जैसी प्रौद्यो गकी की एक बड़ी श्रृंखला के माध्यम से डजिटल और सुलभ है। इंटरनेट और प्रंट दोनों पर कई पारंपरिक प्रकाशन भी हैं। अ धकांश समाचार पत्रों के लए नवीनतम चंताओं या सू चयों को वेब पर या ग्राहकों के लए ईमेल टेक्स्ट संदेशों के रूप में पाया जा सकता है।**[5]**

- ई-पत्रिकाओं का प्रकार

पहुंच, आकार, उपलब्धता आदि के आधार पर इलेक्ट्रॉनिक पत्रिकाओं को निम्न ल खत के रूप में परिभा षत कया जा सकता है।

1. पूर्ण इलेक्ट्रॉनिक लेख, इसके सार या सार के साथ, प्रंटर काउंटर, घटक के बिना केवल इलेक्ट्रॉनिक रूप से सुलभ है, जिसे इलेक्ट्रॉनिक जर्नल के रूप में जाना जाता है।

2. इलेक्ट्रॉनिक प्रंट संस्करण - जहां समाचार पत्र

इलेक्ट्रॉनिक और प्रंट दोनों प्रारूपों में प्रका शत होते हैं, इन पत्रों को डाउनलोड करने योग्य पेपर प्रतियां कहा जाता है।[6]

❖ ई-जर्नल्स वशेषता

ई-पत्रिकाओं में व भन्न उद्देश्यों में प्रश्न, खोज कनेक्शन, संग्रह, स्थायी पहुंच आदि शा मल हैं। निम्न ल खत कुछ प्रभावशाली वशेषताएं हैं:

**1.** अ भगम्यता: पासवर्ड, आईपी पते, या दोनों के माध्यम से ई-पत्रिकाओं के लए सुलभ।

**2.** खोज: ई-पत्रिकाओं के प्रमुख पहलुओं में से एक खोज है। यह उपभोक्ताओं के समय की बचत करता है और उन्हें वे ववरण खोजने देता है जो वे आसानी से चाहते हैं।

**3.** ब्राउजिंग: ब्राउजिंग ई-पत्रिकाओं की एक अन्य प्रमुख वशेषता है जो नाम, लेखकों, वषयों, संस्करणों आदि की सु वधा प्रदान करती है।

**4.** लं कंग: बाहरी और आंतरिक दोनों तरह के वेब पेजों या डजिटल वस्तुओं को जोड़ने के लए ई-जर्नल आवश्यक हैं।

**5.** अनुकूलन: अनुकूलन उपभोक्ता को चुनी हुई पत्रिकाओं में अपनी वरीयता के लए अपनी प्रोफ़ाइल बनाने में मदद करता है। वैयक्तिकरण के दौरान प्रकाशक से ई-मेल के माध्यम से चयनित पत्रिकाओं के सूचना पृष्ठों से उन्नयन प्राप्त कया जा सकता है।

**6.** उपलब्धता: आप कहीं से भी ई-जर्नल्स, कभी भी रैक द्वारा ल खत या खोई नहीं गई हैं, कसी भी समय उपलब्ध हैं।

**7.** त्वरित पत्राचार: अध्ययन के परिणामों को तुरंत रिपोर्ट करने के लए ई-पत्रिकाओं का उपयोग कया जाता है। सर्वर होस्टिंग के बाद पुस्तकालय उपयोगकर्ता स्वचा लत रूप से ई-पत्रिकाओं तक पहुंच सकते हैं।

➢ ई-बुक

इलेक्ट्रॉनिक पुस्तकों, डाउनलोड करने योग्य पुस्तकों और ई-संस्करणों के नाम भी हैं। इसमें टेक्स्ट, चत्र या दोनों शा मल हैं, और इसे कंप्यूटर या अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों पर ल खत और पठनीय पुस्तक-लंबाई के आधार पर सुलभ बनाया गया है। एक डाउनलोड करने योग्य ई-पुस्तक उपलब्ध है। ई-पुस्तकों को एक पेपर बुक इलेक्ट्रॉनिक संस्करण के रूप में भी व र्णत कया जा सकता है, ले कन मुद्रित समकक्ष के बिना ई-पुस्तकें संभव हैं और मौजूद हैं। सम पत ई-पुस्तकों या टैबलेट में ई-पुस्तकें पढ़ने के लए ई-रीडर ऐप्स का उपयोग करना। टैबलेट का उपयोग व्यक्तिगत कंप्यूटर और निश्चित रूप से मोबाइल फोन के साथ ई-पुस्तकें पढ़ने के लए भी कया जा सकता है। ई-बुक प्रारूपों की शुरूआत और वकास के साथ, अन्य को एडोब जैसी महत्वपूर्ण तकनीकी फर्मों से इसके पीडीएफ प्रारूप के साथ प्रायोजन प्राप्त हुआ है और कुछ स्वतंत्र और ओपन-सोर्स प्रोग्रामर द्वारा वत्त पो षत हैं।**[7]**

➢ वेबसाइटें (वर्ल्ड वाइड वेब)

तब से, इलेक्ट्रॉनिक सामग्री वतरित करने के तरीके के रूप में इंटरनेट धीरे-धीरे बढ़ गया है। कई ई-संसाधन वर्ल्ड वाइड वेब पर कसी के लए भी उपलब्ध नहीं हैं और गूगलजैसे खोज इंजन पर सूचीबद्ध नहीं कए जा सकते हैं। एक ई-संसाधन एक ग्रंथ सूची या पूर्ण-पाठ डेटाबेस, ई-जर्नल या जर्नल हो सकता है जो इलेक्ट्रॉनिक स्वरूपों में सुलभ हो, जिससे हम अपने क्षेत्र में उपयुक्त लेखों का पता लगा सकें। मशीन के डेटाबेस, कम्प्यूटरीकृत डवाइस रिकॉ र्डंग संग्रह है। मुख्य बिंदु यह है क एक डेटाबेस को डेटा को संसा धत करने और प्राप्त करने या संशो धत करने की आवश्यकता होती है। डेटाबेस के दो रूप हैं - मुख्य रूप से स्थिर वश्लेषणात्मक डेटाबेस, रीड-ओनली डेटाबेस, जो अनुसंधान के लए संग्रहीत और उपयोग कए गए ऐतिहा सक डेटा रखते हैं। वेब पेजों पर डायना मक रूप से खोज पैरामीटर बनाए जाते हैं। ऑपरेटिंग डेटाबेस के दौरान, डेटा को अपडेट कया जा सकता है।**[8]** ये डेटाबेस फॉर्म आमतौर पर वास्त वक समय में ज्ञान को ट्रैक करने के लए उपयोग कए जाते हैं।

शक्षा में सूचना और संचार प्रौद्यो गकी

आज की दुनिया सूचना वस्फोट की दुनिया है। यह सूचना वस्फोट इतनी तेज गति से हो रहा है क एक साक्षर व्यक्ति भी ऐसा महसूस कर रहा है क वह अनपढ़ है और इस तरह के सूचना वस्फोट का सामना करने में सक्षम नहीं है। यहां सवाल उठता है क इससे कैसे निपटा जाए? जवाब है, सूचना प्रौद्यो गकी (आईटी) जो सूचना वस्फोट से निपटने में मदद कर सकती है।

इस लए, हम कह सकते हैं क सूचना प्रौद्यो गकी सूचना के वस्फोट से नपटने के अलावा और कुछ नहीं है। सूचना प्रौद्यो गकी (आईटी) कंप्यूटिंग और दूरसंचार के माइक्रो-इलेक्ट्रॉनिक्स आधारित संयोजन द्वारा मुखर, चत्रमय, पाठ्य और संख्यात्मक जानकारी का अ धग्रहण, प्रसंस्करण, भंडारण और प्रसार है। अपने आधुनिक अर्थ में यह शब्द पहली बार हार्वर्ड बिजनेस रिव्यू में प्रका शत 1958 के एक लेख में सामने आया, जिसमें लेखक ले वट और व्हिस्लर ने टिप्पणी की क नई तकनीक का अभी तक एक भी स्था पत नाम नहीं है। हम इसे सूचना प्रौद्यो गकी कहेंगे। यह कई तरह के क्षेत्रों में फैला हुआ है, जिसमें प्र क्रयाएं, कंप्यूटर सॉफ्टवेयर, कंप्यूटर हार्डवेयर, प्रोग्रा मंग भाषाएं और डेटा निर्माण जैसी चीजें शा मल हैं, ले कन इन्हीं तक सी मत नहीं हैं। संक्षेप में, कसी भी मल्टीमी डया वतरण तंत्र के माध्यम से कसी भी दृश्य प्रारूप में डेटा, सूचना या क थत ज्ञान प्रदान करने वाली कोई भी चीज़ सूचना प्रौद्यो गकी के रूप में ज्ञात डोमेन स्पेस का हिस्सा मानी जाती है। वैश्वीकरण और तकनीकी परिवर्तनों ने एक नई वैश्विक अर्थव्यवस्था का निर्माण कया है जो प्रौद्यो गकी द्वारा संचा लत है, सूचना से प्रेरित है और ज्ञान से प्रेरित है। इस नई वैश्विक अर्थव्यवस्था के उद्भव का शै क्षक संस्थानों की प्रकृति और उद्देश्य पर गंभीर प्रभाव पड़ता है।[9] चूं क सूचना तक पहुंच तेजी से बढ़ रही है, स्कूलों को सी मत समय में प्रसारित कए जाने वाले सी मत ज्ञान से संतुष्ट नहीं कया जा सकता है। उन्हें लगातार बढ़ते ज्ञान के अनुकूल बनना होगा और इस ज्ञान से निपटने के लए प्रौद्यो गकी से लैस होना होगा।

सूचना और संचार प्रौद्यो ग कयां (आईसीटी) जिसमें रे डयो और टेली वजन शा मल हैं, साथ ही साथ कंप्यूटर और इंटरनेट जैसी नई डजिटल प्रौद्यो ग कयां शै क्षक परिवर्तन और सुधार के लए संभा वत शक्तिशाली उपकरण साबित हुई हैं। जब उ चत रूप से उपयोग कया जाता है, तो व भन्न आईसीटी शक्षा तक पहुंच का वस्तार करने में मदद कर सकते हैं, शक्षा की प्रासं गकता को तेजी से डजिटल कार्यस्थल पर मजबूत कर सकते हैं, और शक्षण और सीखने को वास्त वक जीवन से जुड़ी एक स क्रय प्र क्रया में मदद करके शै क्षक गुणवत्ता बढ़ा सकते हैं।[10]

शक्षण के लए इलेक्ट्रॉनिक संसाधन

सूचना और संचार प्रौद्यो गकी (आईसीटी) की तीव्र प्रगति ने सूचना परिदृश्य में एक क्रांतिकारी बदलाव लाया है जिससे व भन्न सूचना स्रोतों को आसानी से और आसानी से संभालने के लए कई वकल्प पैदा हुए हैं जिसके परिणामस्वरूप ई-संसाधन सबसे अ धक मांग वाले बन गए हैं। न्यूनतम जो खम और समय के साथ छात्रों, शक्षकों और शोधकर्ताओं की व भन्न आवश्यकताओं को पूरा करने के लए आधुनिक पुस्तकालय का भंडार। सूचना प्रौद्यो गकी ने दुनिया को बदल दिया है और सूचना प्राप्त करने के लए एक महत्वपूर्ण उपकरण बन गया है। इलेक्ट्रॉनिक सूचना संसाधनों ने पुस्तकालय संग्रह का एक बड़ा हिस्सा हा सल कर लया है। सूचना संसाधनों, वशेष रूप से ई-संसाधनों के मूल्य और उपयोग में समय के साथ वृद् ध हुई है। इस लए, ई-संसाधनों के व भन्न पहलुओं और उपयोगकर्ताओं द्वारा वशेष रूप से शैक्ष णक संस्थानों के संकाय सदस्यों द्वारा ई-संसाधनों के उपयोग से संबं धत मुद्दों पर अध्ययन करने की आवश्यकता है।[11]

मुद्रण के आ वष्कार ने सूचना पुनर्प्राप्ति और संचार की प्र क्रया में क्रांति ला दी। कताबें हर साल बड़ी संख्या में छपती हैं और आम आदमी के लए सस्ती कीमतों पर उपलब्ध होती हैं। कसी अन्य आ वष्कार का जीवन के सभी क्षेत्रों पर इतना प्रभाव नहीं पड़ा है। कई कारणों से, आने वाले कई वर्षों तक प्रंट प्रारूप अस्तित्व में रहेंगे। तकनीकी वकास के समय में, नई प्रौद्यो ग कयां अक्सर पुरानी संस्थाओं की नकल करती हैं जो जरूरी नहीं क संबं धत हों। एक नए माध्यम का आगमन जरूरी नहीं क पहले वाले को अमान्य कर दे। नए एजेंट को स्थायित्व और वश्वसनीयता प्राप्त करने में समय लगता है। प्रंट एक समय परीक्षण प्रारूप है जो उन वादों को पूरा करना जारी रखता है जिन्हें इलेक्ट्रॉनिक उन्नति सुनिश्चित नहीं कर सकती है। यह भारत जैसे देश में अ धक लागू होता है जहां लोग पारंपरिक दृष्टिकोण का पालन करना पसंद करते हैं। प्रंट मी डया अपनी स्थिरता, स्थायित्व और पूर्णता और उपयोग में आसानी के कारण महत्वपूर्ण है। ले कन जैसा लगता है क हमने मुद्रित शब्द को व्यवस्थित करने का दुर्गम कार्य पूरा कर लया है, प्रकाशन जगत एक और संक्रमण के बीच में है। पुस्तकालय की दुनिया भर से, हम सुनते हैं क लोग पेपर जर्नल से इलेक्ट्रॉनिक जर्नल, सबेनबर्ग में बदल रहे थे। शक्षा महा वद्यालयों पुस्तकालय भी डजिटलीकरण के दौर से गुजर रहे हैं। इलेक्ट्रॉनिक मी डया धीरे-धीरे पुस्तकालयाध्यक्षों को प्रौद्यो गकी की शक्ति और ई-

संसाधनों तक पहुंच के साथ सशक्त बना रहा है। शक्षक शक्षक भी धीरे-धीरे इस बदलाव को अपना रहे हैं।

इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों के उद्भव ने पछले दशक के दौरान दुनिया भर के सभी पुस्तकालयों और सूचना केंद्रों की स्थिति में काफी सुधार कया है। इन तकनीकी वकासों ने पारंपरिक सेवाओं और प्र क्रयाओं को इलेक्ट्रॉनिक संस्करणों से बदल दिया है जो अकाद मक पुस्तकालयों के लए आकर्षक और आ र्थक रूप से व्यवहार्य हैं। पारंपरिक पत्रिकाओं के इलेक्ट्रॉनिक संस्करण प्रकाशन प्रणाली को कम से कम बदलते हैं, क्यों क वे केवल सदस्यता आधारित पत्रिकाओं तक अ धक सु वधाजनक पहुंच प्रदान कर सकते हैं। हालां क, ई- कताबें पारंपरिक प्रंट बुक की तुलना में सामग्री को अ धक बहुमुखी और लचीला बनाती हैं।

ई-संसाधनों के इन लाभों के कारण, शक्षा महा वद्यालय के पुस्तकालय भी सूचना पुनर्प्राप्ति के क्षेत्र में तकनीकी प्रगति के साथ शक्षक शक्षकों को सक्षम बनाने के लए उन्हें अनुकू लत करने के दबाव के अधीन हैं। शक्षकों को कम पारंपरिक अर्थों में पाठ्यक्रम के लए चुनौती दी गई है और शक्षण और सीखने के सद्धांतों में बदलाव के साथ अद्यतन रखने के लए। इन परिवर्तनों का अध्ययन केवल इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों के उपयोग से ही वश्व स्तर पर कया जा सकता है क्यों क प्रंट संसाधनों का भंडार बहुत बड़ा है।[12]

पुस्तकालय में उपलब्ध डजिटल संसाधन उपयोगकर्ता के लए आवश्यक जानकारी तक एक समीचीन तरीके से पहुंच को सु वधाजनक बनाने में एक प्रमुख भू मका निभाते हैं। इसके अलावा, प्रंट प्रारूपों का उपयोग करने के लए पुस्तकालय में जाने की आवश्यकता नहीं है क्यों क डजिटल संसाधनों का उपयोग कसी भी उपयोगकर्ता द्वारा नेटवर्क या प्रमाणीकरण व धयों के माध्यम से कसी भी समय आराम से ऑनलाइन एक्सेस के माध्यम से कया जा सकता है। अब वेब-आधारित इलेक्ट्रॉनिक संसाधन बन गए हैं अकाद मक अनुसंधान में सबसे लोक प्रय उपकरण।

इलेक्ट्रॉनिक संसाधन पुस्तकालयों और प्रतिस्पर्धी सेवा में सूचना संचार में उभरते वातावरण में से एक है। ई-संसाधनों में आमतौर पर ई-पुस्तकें, ई-जर्नल्स, लेख, समाचार पत्र, थी सस, शोध प्रबंध, डेटाबेस और सीडी-रोम शा मल होते हैं, जो प्रंट मी डया के वकल्प होने की संभावना है। एमराल्ड, एब्स्को, स्कोपस ऑनलाइन डेटाबेस के कुछ उदाहरण हैं। सभी अद्यतन जानकारी इन ई-संसाधनों में प्रका शत की जाती है। तेजी से वकास के लए पुस्तकालयों में इलेक्ट्रॉनिक सूचना संसाधनों की जानकारी और उपयोग आवश्यक और महत्वपूर्ण है।[13]

## निष्कर्ष

अध्ययन का उद्देश्य मध्य प्रदेश स्थित वश्व वद्यालयों में संकाय सदस्यों और शोधा र्थयों के बीच ई-संसाधनों के बारे में जागरूकता और उपयोग का पता लगाना है। इसके लए शोधकर्ता ने व भन्न संस्थानों से 600 नमूनों का चयन कया। संस्थानों को डीम्ड वश्व वद्यालयों के रूप में वर्गीकृत कया गया है और राज्य वश्व वद्यालयों को 600 नमूनों को स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण के आधार पर चुना गया था वर्तमान अध्ययन ने वश्व वद्यालयों में संकाय सदस्यों और शोधा र्थयों के बीच ई-संसाधनों के बारे में जागरूकता और उपयोग को जानने का प्रयास कया। वशेष रूप से पुस्तकालयों में, यह उपयोगों के लए उच्च प्रभाव देता है। तेजी से दे रहे तकनीकी बदलाव। जानकारी भी और वहाँ से अद्यतन। शोधकर्ताओं और छात्रों के लए ई-संसाधनों के माध्यम से जानकारी प्राप्त करना बहुत आसान और प्रभावी है। वे अद्यतन ज्ञान वक सत करते हैं। यहाँ पुस्तकालय, यानि डजिटल पुस्तकालय में कंप्यूटर का उपयोग सभी शक्षण संस्थानों के लए बहुत महत्वपूर्ण है।

## संदर्भ

1. जोसेफ जेस्टिन, के जे एंड एली सोर्नम, एस (2016)। केरल में इंजीनियरिंग कॉलेजों के संकाय सदस्यों द्वारा ई-संसाधनों का उपयोग: एक सर्वेक्षण। डजिटल लाइब्रेरी स र्वसेज के इंटरनेशनल जर्नल, 6 (3), 31-38।

2. सुमा थरल, के और र व, आर। (2016)। शक्षक शक्षकों के बीच ई-सामग्री का उपयोग। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इनोवेटिव रिसर्च एंड डेवलपमेंट, 5(3), 141-147।

3. आईना, आर.एफ. (2014)। अकाद मक कर्मचारियों के बीच इलेक्ट्रॉनिक डेटाबेस की जागरूकता, पहुंच और उपयोग। बिजनेस स्कूल और प्रबंधन की समीक्षा। 3 (6)। से लया गया:

tt://arabianjbmr.com/pdfs/KD_VOL_3_6/4.पीडीएफ

4. गर्ग आरजी, ताम्रकर एके। (2014)। भारतीय प्रौद्यो गकी संस्थान, खड़गपुर के स्नातकोत्तर छात्रों, शोधा र्थियों और संकाय सदस्यों द्वारा इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों का उपयोग। जर्नल ऑफ साइंटोमेट्रिक रिसर्च, 3 (2), 75-81।

5. क्वाफोआ, पॉ लना नाना या; इमोरो, उस्मान; और अफफुल-आर्थर, पॉ लना। (2014)। केप कोस्ट वश्व वद्यालय में प्रशासकों और संकाय के बीच इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों के उपयोग का आकलन। लाइब्रेरी फलॉसफी एंड प्रैक्टिस (ई-जर्नल) पेपर 1094।

6. कुंबर, मनोहर बी. लमन और गौरी एन. गौरीकेरेमठ। (2014)। वज्ञान वभागों, कर्नाटक वश्व वद्यालय, धारवाड़ के अनुसंधान वद्वानों द्वारा ई-संसाधनों का उपयोग। पुस्तकालय और सूचना वज्ञान में अ ग्रमों के जर्नल, 3 (4), 320-327।

7. शांति, एल और राधाकृष्णन, एन। (2014)। अन्ना प्रौद्यो गकी वश्व वद्यालय, कोयंबटूर और इसके संबद्ध कॉलेजों में अनुसंधान वद्वानों के बीच इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों का उपयोग पैटर्न। मान वकी और सामाजिक वज्ञान के OSR जर्नल। 19(7), 23-26

8. अबीन्यू, ए.ए. और वुडा, एस। (2013)। SO-UTAUT मॉडल पर आधारित वश्व वद्यालयों में इलेक्ट्रॉनिक पुस्तकालय सेवाओं की स्वीकृति और उपयोग का एक केस स्टडी। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ इनोवेटिव रिसर्च इन कंप्यूटर एंड कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग

9. डांगे, जे.के., गरीश, टी., स वता, एम., सुषमा, एन.जे. और वीणाकुमारी, (2013)। कुवेम्पु वश्व वद्यालय के स्नातकोत्तर छात्रों द्वारा जागरूकता और डिजिटल सूचना स्रोतों और सेवाओं के उपयोग पर एक अध्ययन। इं डियन जर्नल ऑफ एजुकेशन रिसर्च एक्सपेरिमेंटेशन एंड इनोवेशन।
http://www.ijerei.com/index.php?option=com_content&view=article&id=18 से लया गया1: अध्ययन-पर-जागरूकता-और-उपयोग-के- डिजिटल-सूचना-स्रोत-और-सेवा es-by-pg-students-ofkuvempu-university&catid=86:english&Itemid=157

10. अहमद, एम. और पांडा, के.सी. (2013)। दुबई अंतरराष्ट्रीय शैक्ष णक शहर (डीआईएसी) में भारतीय संस्थानों के संकाय सदस्यों द्वारा इलेक्ट्रॉनिक सूचना संसाधनों के बारे में जागरूकता और उपयोग: एक सर्वेक्षण।

11. डोलो-नदलवाना, एन। (2013)। केप प्रायद्वीप प्रौद्यो गकी वश्व वद्यालय (सीपीयूटी), संर चत शोध प्रबंध में शक्षा वदों और स्नातकोत्तर छात्रों द्वारा पुस्तकालय के इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों का उपयोग और मूल्य। से लया गया: https://open.uct.ac.za/bitstream/handle/11427/10336/thesis_hum_2013_dolo_ndlwana_nomambulu. पीडीएफ?अनुक्रम=1

**Corresponding Author**

**Reetu Tiwari***

Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.